इकाई-II

6. चावल की रोटियाँ

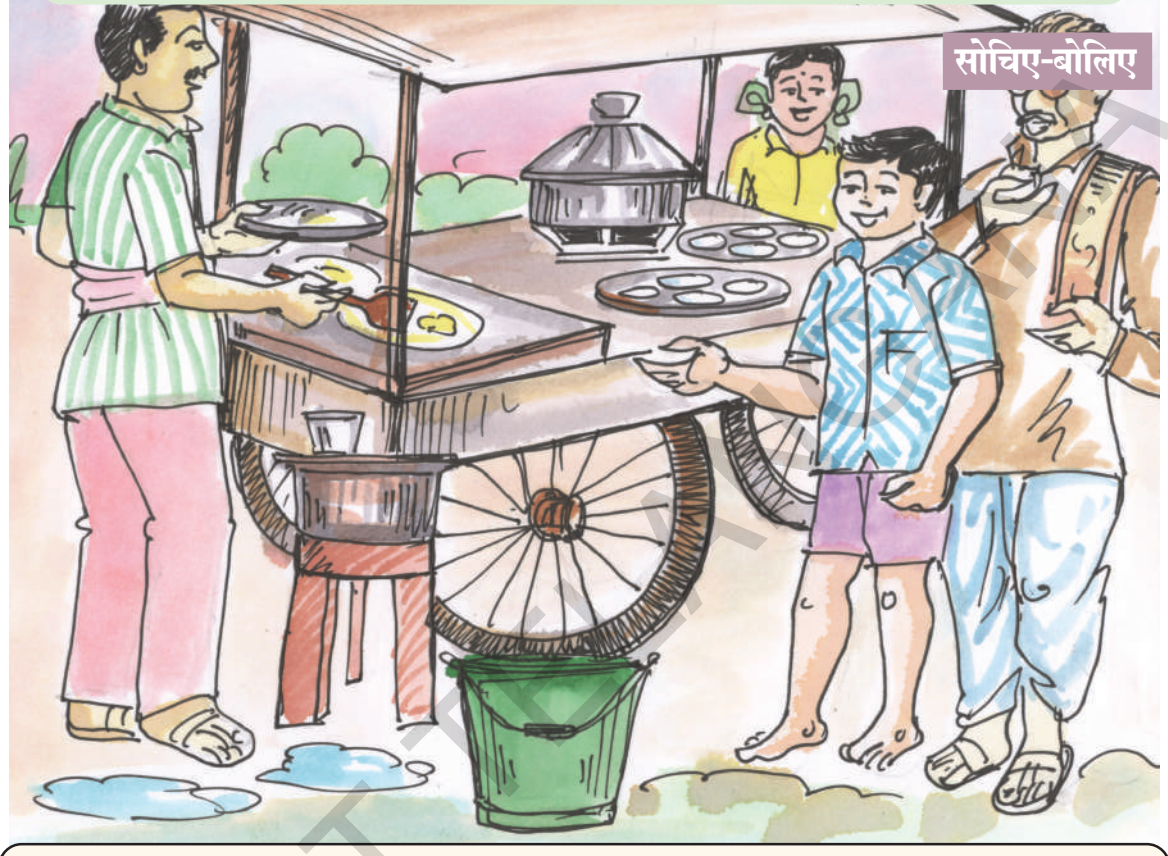

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. ठेले वाला क्या बना रहा होगा?
3. इस चित्र को देखकर आप के मन में क्या विचार उठ रहे हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

पात्र परिचय

कोको	:	आठ साल का एक बर्मी लड़का, कुछ मोटा
नीनी	:	नौ साल का बर्मी लड़का, कोको का दोस्त
तिन सू	:	आठ साल का बर्मी लड़का, कोको का दोस्त
मिमि	:	सात साल की बर्मी लड़की, कोको की दोस्त
उ बा तुन	:	जनता की दुकान का प्रबंधक (इसका अभिनय कोई लंबे कद का लड़का नकली मूँछें और चश्मा लगाकर कर सकता है)

(एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ । एक दीवार के सहारे रखी अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। कोको आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।)

कोको : माता-पिता धान लगाने खेतों में चले गए हैं। जब तक माँ खाना बनाने के लिए लौट कर नहीं आती। मुझे घर की देखभाल करनी है। हूँ.....ऊँ.....ऊँ.....देखता हूँ माँ ने नाश्ते में मेरे लिए क्या बना कर रखा है।

(वह अलमारी की तरफ़ जाता है और उसे खोलकर देखता है। एक तश्तरी निकाल कर देखता है कि चावल की चार रोटियाँ हैं । वह होंठों पर जीभ फेरता है और मुस्कुराता है।)

कोको : आहा....मज़ा आ गया। चावल की रोटियाँ। मेरी मनपसंद चीज़।

(वह पेट मलता हुआ रोटियों को मेज़ पर रखता है और बैठ जाता है।)

कोको : आज डट कर नाश्ता होगा ।

(वह एक रोटी उठाकर मुँह में डालने लगता है, तभी कोई दरवाज़े पर दस्तक देता है।)

नीनी : कोको...ए कोको दरवाज़ा खोलो । मैं हूँ नीनी।

SCERT TELANGANA

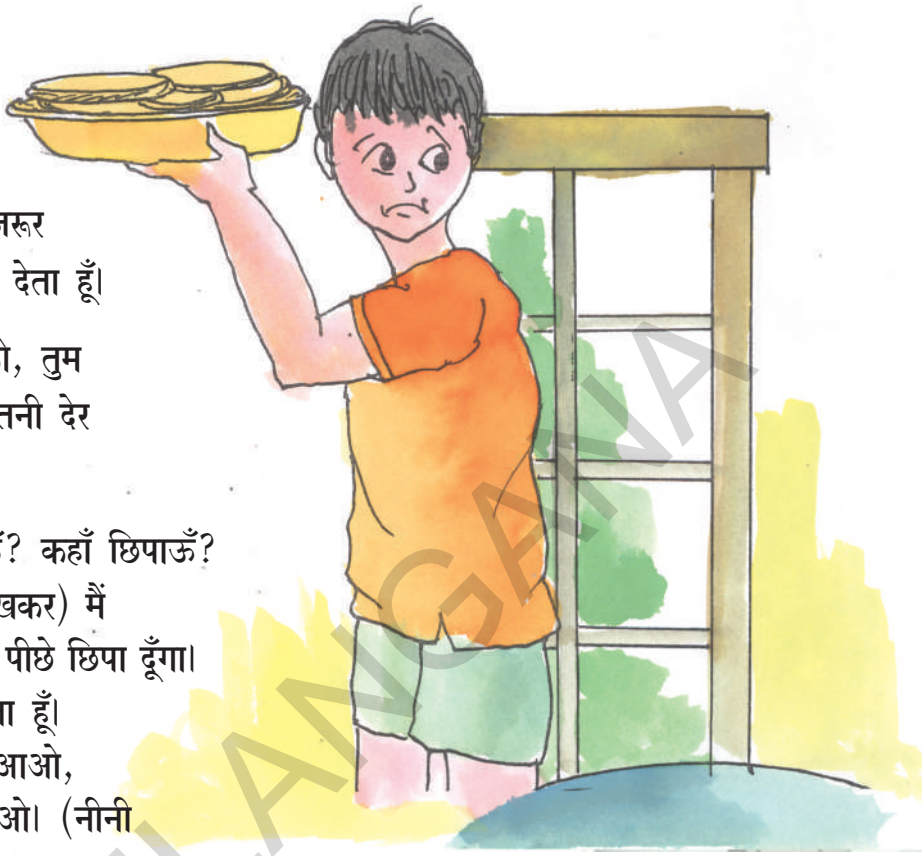

कोको : गज़ब हो गया । यह तो भुक्खड़ नीनी है। उसकी नज़र में रोटियाँ पड़ी तो ज़रूर माँगेगा।मैं इन्हें छिपा देता हूँ।

नीनी : दरवाज़ा खोलो कोको, तुम क्या कर रहे हो? इतनी देर लगा दी।

कोको : मैं इन्हें कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (रेडियो की तरफ़ देखकर) मैं तश्तरी को रेडियो के पीछे छिपा दूँगा। (ज़ोर से) अभी आता हूँ। नीनी...ज़रा रुको। आओ, नीनी। अंदर आ जाओ। (नीनी अंदर आती है।)

नीनी : दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?

कोको : कुछ खास नहीं.....मैंने अभी-अभी नाश्ता किया और मुँह धोने लगा था ।बोलो, सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?

नीनी : क्या? यह मत कहना कि तुम भूल गए थे। परीक्षा के बारे में रेडियो पर खास सूचना आने वाली है।

कोको : लेकिन तुम्हारे घर भी तो रेडियो है।

नीनी : वह खराब है । इसीलिए सोचा तुम्हारे रेडियो पर सुनूँगा। (नीनी गोल मेज़ के पास बैठ जाता है)

नीनी : रेडियो उठाकर यहीं ले आओ ताकि हम आराम से लेटे-लेटे सुन सकें।

कोको : नीनी, हमारे रेडियों में भी कुछ खराबी है।

नीनी : आओ, कोशिश करके देखें । मैं उठाकर ले आता हूँ । (नीनी अलमारी की तरफ जाने लगता है)

कोको : नहीं,नहीं। नीनी, इसे मत छूना। छुओगे तो करंट लगेगा। (नीनी रुक जाता है)

SCERT TELANGANA

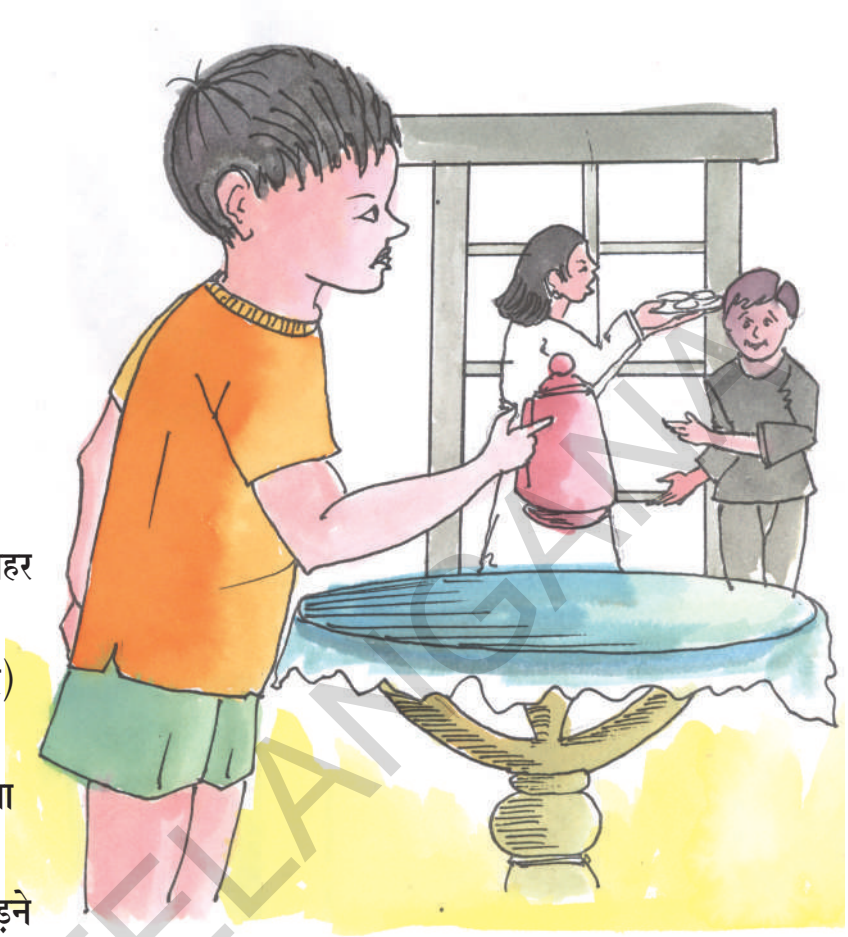

नीनी : मैंने तो इसे छू लिया था। भई, मैं खबर ज़रूर सुनना चाहता हूँ। तिन सू के घर जाता हूँ। तुम आओगे?

कोको : नहीं। अच्छा फिर मिलेंगे।

(नीनी तेज़ी से बाहर निकल जाता है)

कोको : (गहरी सांस लेकर) बाल-बाल बचे। अब चलकर नाश्ता किया जाए। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।

(कोको तश्तरी उठाकर मेज़ के पास आता है। एक रोटी उठाकर खाने लगता है, तभी दरवाज़े पर दस्तक सुनाई देती है।)

कोको : (तश्तरी नीचे देखकर) जाने अब कौन आ टपका।

मिमि : कोको, दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ मिमि।

कोको : बाप रे। यह तो मिमि है। उसे चावल की रोटियाँ मेरी ही तरह बहुत अच्छी लगती हैं और वह हमेशा भूखी होती है। मुझे रोटियाँ छिपा देनी चाहिए। लेकिन कहाँ? वह तो कुछ खाने की चीज़ ढूँढ़ने के लिए सारे कमरे की तलाशी लेगी।

मिमि : (फिर दरवाज़ा खटखटाकर) कोको, दरवाज़ा खोलो न...इतनी देर क्यों लगा रहे हो?

कोको : कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (कमरे के चारों तरफ़ देखकर ठीक, इस फूलदान के अंदर छिपा दूँ?)

(कोको फूलदान में तश्तरी रखकर दरवाज़ा खोलता है। मिमि कागज़ में लिपटा बंडल उठाए कमरे में आती है)

SCERT TELANGANA

मिमि : दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों कर दी?

कोको : मैंने अभी-अभी नाश्ता किया था और मुँह धोने लगा था। आओ बैठो।
(कोको और मिमि मेज़ के इर्द-गिर्द बैठते हैं।)

मिमि : मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले। तुम्हारी माताजी ने कहा कि तुम्हारे लिए चावल की कुछ रोटियाँ रखी हैं। मैंने सोचा...

कोको : चावल की रोटियाँ? हाँ थीं तो । लेकिन मैंने सब खा लीं ।

मिमि : एक भी नहीं बची?

कोको : सॉरी मिमि, मैंने सब खा लीं। (हाथ से पेट मलते हुए) पेट एकदम भर गया है। लगता है आज तो दोपहर का खाना भी नहीं खाया जाएगा।

मिमि : बहुत बुरी बात। मेरी माँ ने केले के पापड़ बनाए थे । मैंने सोचा तुम्हारे साथ बाँट कर खाऊँगी । मैं चार पापड़ लाई हूँ । दो तुम्हारे लिए, दो अपने लिए । सोचा था तुम्हारी चावल की रोटियाँ और मोटे पापड़, दोनों का बढ़िया नाश्ता रहेगा ।
(मिमि कागज़ का बंडल खोलती है और पापड़ निकालती है। वह उन्हें एक तश्तरी में डालकर मेज़ पर रखती है)

मिमि : गरमागरम है और स्वादिष्ट भी। तुम्हारी भी क्या बदकिस्मती है कि तुम्हारा पेट बिल्कुल भरा हुआ है और तुम कुछ भी नहीं खा सकते ।

कोको : (पापड़ देखकर होंठो पर जीभ फेरकर, स्वगत) मैंने बड़ी गलती की जो उसे बताया कि मेरा पेट भरा हुआ है। लेकिन मैं समझता हूँ कि चारों पापड़ वह खा नहीं सकती। शायद दो मेरे लिए छोड़ दे।

मिमि : (एक पापड़ उठाकर) क्या इन्हें निगलने के लिए चाय है ?

कोको : हाँ, हाँ, अलमारी पर है । मैं ले आता हूँ।
(कोको चाय की केतली और दो कप उठा लाता है। मिमि एक कप में चाय डालती है।)

मिमि : तुम तो चाय पिआगे नहीं। पेट भरा होगा।

कोको : (स्वगत) मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा है। भगवान करे मिमि को यह गुड़गुड़ न सुनाई दे।

मिमि : (पापड़ खाते हुए) यह कैसी आवाज़ है?

कोको : आवाज़? कैसी आवाज़?

मिमि : हल्की-सी गड़गड़ाने की आवाज़। यह फिर हुई। सुना तुमने?

SCERT TELANGANA

कोको : यह...? हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज़ करता है।
(दरवाज़े पर दस्तक)

कोको : कौन?

तिन सू: मैं हूँ तिन सू।
(कोको उठने लगता है।)

मिमि : तुम बैठे रहो। आराम करो। तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है। मैं खोलती हूँ।
(मिमि दरवाज़ा खोलती है। तिन सू गेंदे के फूलों का गुच्छा लिए आता है।)

तिनसू : आहा! मिमि भी यहाँ है।

मिमि : आओ तिन सू।

तिनसू : (मेज़ के पास जाकर) हैलो कोको। क्या बात है? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या?

कोको : हैलो तिन सू।
(मिमि और तिन सू मेज़ के पास बैठते हैं।)

मिमि : (तिन सू से) वह ठीक हैं। बस, नाश्ते में चावल की रोटियाँ खा ली हैं।

तिन सू: (केले के पापड़ों की तरफ़ देखकर) आहा, केले के पापड़!

मिमि : मैं कोको के लिए भी लायी थी। लेकिन चूँकि उसका पेट एकदम भरा हुआ है, तुम इन्हें खत्म करने में मेरी मदद करो।

तिन सू: नेकी और पूछ-पूछ। तुम्हारी माँ गाँव में सबसे बढ़िया पापड़ बनाती है।
तिन सू (एक पापड़ उठाकर खाने लगता है। मिमि उसके लिए कप में चाय डालती है।)

मिमि : (कप देकर) यह लो चाय के साथ खाओ।

तिन सू: (चाय की चुस्की लेकर होठों पर जीभ फिराकर) बहुत बढ़िया चाय है। मेरी खुशकिस्मती जो इस वक्त यहाँ आ गया।

कोको : (स्वगत) तुम्हारी खुशकिस्मती और मेरी बदकिस्मती।
(मिमि और तिन सू एक-एक पापड़ खा लेते हैं और मिमि दूसरा उठाती है।)

मिमि : यह लो तिन सू। एक और खाओ।

तिन सू: नहीं, मेरे लिए तो एक ही काफ़ी है।

SCERT TELANGANA

मिमि : आधा तो ले लो। दूसरा आधा मैं खा लूँगी। एक कोको के लिए रहा। शाम को खा लेगा।

तिन सूः तुम ज़ोर डालती हो तो ले लेता हूँ।

कोको : (स्वगत) चलो, एक तो मेरे लिए छोड़ रहे हैं । मैं भूख से मरा जा रहा हूँ।

तिन सूः यह आवाज़ कैसी है?

मिमि : यहाँ एक बड़ा चूहा घुस आया है। कोको कहता है, वही यह आवाज़ करता है।

तिन सूः ऐसा लगा कि किसी का पेट भूख से गुड़गुड़ा रहा है।

(तिन सू और मिमि पापड़ खत्म करते हैं।)

मिमि : अच्छा, ये फूल कैसे हैं?

तिन सूः ओह, मैं तो भूल गया था। मेरी माँ ने कहा है कि कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। उन्होंने ये फूल उस फूलदान में रखने के लिए भेजे हैं। (इधर-उधर देखता है। उसे अलमारी के ऊपर फूलदान दिखाई देता है) वह रहा फूलदान, अलमारी पर।

मिमि : मुझे दो। मैं इन्हें फूलदान में रख आती हूँ।

कोको : नहीं, नहीं मिमि।

मिमि : तुमने तो मुझे डरा ही दिया। क्या बात है?

कोको : ये फूल.....ये फूल । मेरी माँ को इस फूल से एलर्जी है। जब भी वह यह फूल देखती हैं उनके जिस्म में फुंसियाँ निकल आती हैं।

तिन सूः ओह, मुझे इस बात का पता नहीं था । खैर मैं इन फूलों को वापस ले जाऊँगा।

कोको : (चैन की साँस लेकर, स्वगत) मुझे रोटियों को बचाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ेंगे। (दरवाज़े पर दस्तक)

कोको : कौन?

उ बा तुनः मैं हूँ। दुकान का मैनेजर उ बा तुन।

(कोको से) तुम मत उठो कोको। मैं खोलती हूँ दरवाज़ा।

(ज़ोर से) अभी आई उ बा तुन चाचा।

(उ बा तुन नीला फूलदान लिए आता है)

उ बा तुनः हैलो बच्चो (मेज़ की तरफ़ देखकर) लगता है छोटी-मोटी पार्टी चल रही है।

मिमि : आओ चाचा, आओ।

(उ बा तुन मेज़ के पास बैठ जाता है)

SCERT TELANGANA

मिमि : चाय लेंगे आप?

उ बा तुनः कोई एतराज़ नहीं । बहुत-बहुत शुक्रिया।

(मिमि अलमारी की तरफ जाकर कप ले आती है और चाय डालकर उ बा तुन को देती है।)

उ बा तुनः (कप से चुस्की लेकर) क्या मज़ेदार चाय है। खुशबूदार ताज़गी लाने वाली ।

तिन सू: चाचा, आपने नाश्ता कर लिया है?

उ बा तुनः अभी किया नहीं। मैं सोच रहा था, किसी चाय की दुकान पर रुककर कर लूँगा।

मिमि : चाय की दुकान पर जाने की क्या ज़रूरत? आप यह पापड़ ले सकते हैं।

उ बा तुनः लेकिन...मैं तुममें से किसी का हिस्सा नहीं मारना चाहता।

तिन सू : कोई बात नहीं चाचा। हम सबके पेट तो भर गए हैं।

(उँगली से पेट को छूता है)

उ बा तुनः बहुत-बहुत शुक्रिया। अरे, यह आवाज़ कैसी है?

तिन सू: यह चूहे की आवाज़ है। अक्सर यह आवाज़ करता है।

उ बा तुनः मुझे लगा किसी का पेट भूख से कुलबुला रहा है।

(उ बा तुन पापड़ उठाकर खाने लगता है।)

उ बा तुनः कोको, तुम आज बहुत चुप हो। तबियत तो ठीक है?

कोको : कुछ नहीं चाचा। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

मिमि : उसका पेट बहुत भरा हुआ है। नाश्ता बहुत डट कर किया है।

(उ बा तुन पापड़ खत्म करके हाथ से मुँह पोंछता है।)

उ बा तुनः कोको, तुम्हारी माँ हमारी दुकान से एक फूलदान लाई थीं (इधर- उधर देखकर) हाँ, वह रहा।

कोको : क्यों? फूलदान का क्या करना है?

SCERT TELANGANA

उ बा तुनः तुम्हारी माँ ने नीला फूलदान माँगा था। उस वक्त मेरे पास वह रंग नहीं था, इसलिए वह गुलाबी ही ले आई। उनके जाने के बाद मुझे एक नीला फूलदान मिल गया। जाकर गुलाबी फूलदान उठा लेता है और उसकी जगह नीला फूलदान रख देता है।

उ बा तुन : (कोको से) मुझे यकीन है, तुम्हारी माँ नीला फूलदान देखेंगी तो बहुत खुश होंगी। अब मैं चलूँगा। शुक्रिया और गुडबाई।

मिमि-तिन सू : गुडबाई चाचा।

कोको : गुडबाई चाचा (स्वगत) और गुडबाई मेरी चावल की रोटियों।

पी. औंग खिन

अनुवाद-मस्तराम कपूर

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. कहते हैं - एक झूठ बोलने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं? क्या आपको नाटक पढ़कर ऐसा लगता है, क्यों?
2. क्या कभी आपने कोई चीज़ या बात दूसरों से छिपाई या छिपाने की कोशिश की है? उस समय क्या हुआ था? अपने शब्दों में बताइए।
3. कभी आपको भी खाली पेट रहना पड़ा होगा। उस समय का अपना अनुभव बताइए।

पढ़िए

I. नीचे दिये गये शब्दों पर ध्यान दीजिए और पाठ में से ऐसे अन्य शब्द चुनकर लिखिए।

उदाहरण : चीज़, तरफ़

....

II. पाठ पढ़कर निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. कहीं प्रार्थना की घंटियाँ .....हैं।
2. मुझे घर की देखभाल .....है।
3. रेडियो पर खास सूचना.....है।
4. दरवाज़े पर दस्तक.....है।
5. वही यह आवाज़ .....है।

III. वाक्य पढ़िए और बताइए कि, किसने- किसे कहा?

1. ''हमारे रेडियो में भी कुछ खराबी है।''
2. मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले।
3. हाँ, हाँ अलमारी पर है । मैं ले आता हूँ।
4. यह लो, चाय के साथ खाओ ।

SCERT TELANGANA

IV. पाठ पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. जिन पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं उन्हें 'मुख्य पात्र' और जिनकी भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती है उन्हें 'गौण पात्र' कहते हैं। इस नाटक के मुख्य और गौण पात्रों के नाम लिखिए।
2. नीनी कोको के घर क्यों आता है? कोको क्या बहाना बनाता है?
3. मिमि ने केले के पापड़ और चावल की रोटियों के लिए क्या सोचा था?
4. अंत में चावल की रोटियों का क्या होता है ?

लिखिए

1. पाठ में कोको और मिमि अपने व्यंजनों के बारे में सोच रहे थे कि वे बहुत स्वादिष्ट हैं । जब आपकी माँ आपका मनपसंद व्यंजन बनाकर आपके टिफिन में देती है तो उस समय आप क्या सोचते हैं ?
2. आपके माता-पिता के काम पर चले जाने के बाद आपके मन में कैसे विचार आते हैं ?
3. यदि आप कोको के स्थान पर होते तो क्या करते?

शब्द भंडार

I. ''कोको के माता-पिता धान लगाने के लिए खेतों में गए।'' ''कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाई।'' एक ही चीज के विभिन्न रूपों के अलग-अलग नाम हो सकते हैं। नीचे ऐसे कुछ शब्द दिये गये हैं। उनमें से सही शब्द चुनकर तालिका में लिखिए।

चावल- आटा - धुली दाल - भात - गेहूँ - सूजी - धान

साबुत दाल - मुरमुरा - मैदा - चिउड़ा - छिलका दाल

SCERT TELANGANA

धान	दाल	गेहूँ
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

II . दीवार पर बाँस की चटाइयाँ टंगी थी । बाँस से चटाई के अतिरिक्त और क्या-क्या चीजें बनायी जाती हैं। लिखिए।

....

III . 'रोटियाँ' जिन चीज़ों से बनाई जा सकती हैं, उनके नाम वर्ग पहेली में से ढूँढ़कर लिखिए । उदा. जवार

म	स	ल	जौ	.....
क	बा	ज	रा	.....
ई	क	वा	गी	.....
स	म	र	प	.....
गे	हूँ	ज	जा	.....

- ''मुझे जल्दी घर जाना है, मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।

पेट में 'चूहे दौड़ना' इस मुहावरे का अर्थ है, बहुत भूख लगना। इस प्रकार के 'पेट' से संबंधित दो मुहावरे लिखिए और उनका अर्थ बताइए।

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। जहाँ तक रोटी की बात है हमारे देश में कई लोगों के भाग्य में यह नहीं होती है। इसी रोटी के बारे में लिखी इस कविता को आगे बढ़ाइए ।

गोल-गोल रोटी
गेहूँ की रोटी, जवारी की रोटी
अम्मा ने बनाई, जौ की भी रोटी
गोल रोटी, चौकोर रोटी
.....

.....

.....

प्रशंसा

आपकी माँ ने आपका मनपसंद व्यंजन बनाया है। अपनी माँ की पाक-कला के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

(के , में, ने, को, से ....)

'' कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। ''

ऊपर लिखे वाक्य में जिन शब्दों के नीचे रेखा खींची है। वे वाक्य में शब्दों का आपस में संबंध बताते हैं। नीचे एक मज़ेदार किताब ''अनारको के आठ दिन'' का एक अंश दिया गया है। उसके खाली स्थानों में इस प्रकार के सही शब्द लिखिए।

अनारको एक लड़की है। घर ....लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा जो है,सो उस .....हुक्म चलाना आसान होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप में मत जाना, अन्नो बाहर अँधेरा है। कहीं मत जा, बारिश .....भीगना मत, अन्नो। और कोई

SCERT TELANGANA

बाहर .....घर में आए तो घरवाले कहेंगे .....ये हमारी अनारको है, प्यार से हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार .....हुह।

आज अनारको सुबह सोकर उठी तो हाँफ रही थी। रात सपने .....बहुत बारिश हुई । अनारको .....याद किया और उसे लगा , आज .....सपनों में जितनी बारिश हुई उतनी तो पहले के सपनों ..... कभी नहीं हुई। कभी नहीं। जमके बारिश हुई थी। आज.....? सपने .....और जमकर उसमें भीगी थी अनारको। खूब उछली थी, कूदी थी, चारों तरफ पानी छिटकाया था और खूब-खूब भीगी थी।

परियोजना कार्य

- चावल से बनी कोई एक खाने की चीज़ बनाने की विधि पता कीजिए और उसे नीचे दिए गए बिंदुओं के हिसाब से लिखिए ।
- सामग्री
- तैयारी
- विधि

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर छोटा नाटक लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA